फरीसी
कर संग्राहक

...क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह ऊंचा किया जाएगा। ल्यूक 18:14

और उस ने कितनोंसे जो अपके ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और औरोंको तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा: कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्यना करने के लिथे गए; एक फरीसी और दूसरा चुंगी लेनेवाला। फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्योंकी नाई अन्धेर करनेवाला, अन्यायी, व्य भिचारी, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं, और जो कुछ मेरे पास है उसका दंशांश देता हूं। और महसूल लेनेवाले ने दूर खड़े होकर अपक्की आंखे आकाश की ओर उठाना न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा, हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर। मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहरकर अपके घर गया; क्योंकि जो कोई अपके आप को बड़ा बनाएगा, वह नीचा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा,
वह ऊंचा किया जाएगा। लूका 18:9-14

...वह दीनों की दोहाई नहीं भूलता। भजन 9:12
यहोवा सब चापलूस ओठों को, और उस जीभ को जिस से बड़ा बोल निकलता है काट डालेगा । भजन 12:3
क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो यहोवा पर भरोसा रखता है, और अभिमानियोंऔर फूठ की ओर फिरनेवालोंपर दृष्टि नहीं करता। भजन 40:4
चाहे यहोवा बड़ा हो, तौभी वह दीन का आदर करता है, परन्तु अभिमानियोंको वह दूर ही से पहिचानता है।
भजन संहिता 138:6

जब अहंकार आता है, तब अपमान भी होता है, परन्तु नम्र लोगों में बुद्धि होती है। नीतिवचन 11:2

यहोवा घमण्डियों के घर को नाश करेगा, परन्तु विधवाओं के सिवाने को वह स्थिर करेगा। नीतिवचन 15:25

यहोवा का भय मानना बुद्धि की शिक्षा है; और सम्मान से पहले विनम्रता है। नीतिवचन 15:33

जितने मन के घमण्डी हैं उन से यहोवा घृणा करता है; चाहे हाथ मिलाए, तौभी वह निर्दोष न ठहरेगा। नीतिवचन 16:5

विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता है। घमण्डियों के संग लूट बांट लेने से, दीन लोगों के साथ नम्रता से रहना उत्तम है। नीतिवचन 16:18-19

विनाश से पहिले मनुष्य का मन घमण्ड से, और महिमा से पहिले नम्रता से रहता है। नीतिवचन 18:12

नम्रता और यहोवा के भय मानने ही से धन, और प्रतिष्ठा, और जीवन मिलता है। नीतिवचन 22:4

मनुष्य का घमण्ड उसे नीचा करता है, परन्तु जो मन में नम्र है, वह महिमा के कारण स्थिर रहती है। नीतिवचन 29:23

दुष्ट अपने घमण्ड में होकर कंगालोंको सताता है; वे उनकी कल्पना की हुई युक्तियोंमें फँस जाएं। क्योंकि दुष्ट अपने मन की अभिलाषा पर घमण्ड करता, और लोभी को आशीष देता है, जिस से यहोवा घृणा करता है। दुष्ट अपने मुख के घमण्ड के कारण परमेश्वर की खोज नहीं करेगा: परमेश्वर उसके सारे विचारों में नहीं है। भजन 10:2-4

कौन तुझे दूसरे से भिन्न बनाता है? और तेरे पास क्या है जो तू ने नहीं पाया? अब यदि तू ने उसे पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानो तू ने उसे पाया ही नहीं?
1 कुरिन्थियों 4:7

लेकिन वह और अधिक अनुग्रह देता है। इस कारण वह कहता है, परमेश्वर अभिमानियों का साम्हना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। याकूब 4:6

इसी प्रकार हे नवयुवकों, अपने आप को बड़ों के अधीन करो। हाँ, तुम सब के सब एक दूसरे के आधीन रहो, और दीनता पहिनो: क्योंकि परमेश्वर घमण्डियों का साम्हना करता है, और दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीन बनो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर ऊंचा करे: 1 पतरस 5:5-6

क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा, और जीवन का घमण्ड, वह पिता का नहीं, परन्तु संसार का है। 1 यूहन्ना 2:16